रीति

रीङ् धातु में क्ति प्रत्यय के योग से रीति शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है - प्रगति, पद्धति, प्रणाली, मार्ग इत्यादि।

आचार्य "वामन" रीति को काव्य की आत्मा मानते हुए कहते हैं - "रीतिरात्मा काव्यस्य।" रीति तत्व काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार ईश्वर की निर्माण शक्ति से निर्मित लावण्यवती नारी अनिर्वचनीय सौन्दर्य को प्राप्त कर सहृदय मानव के विलास एवं आकर्षण की वस्तु होती है, उसी प्रकार लोकोत्तर काव्य-निर्माण-कुशल कवि द्वारा निर्मित कविता सहृदय के हृदय में रस निष्पत्ति कर उसे आनन्द के सागर में निमग्न कर देती है। यह आनन्द कवि की रीति या शैली पर विशेष निर्भर रहता है, क्योंकि कविता कामिनी का यह भव्य-भवन रीति पर ही खड़ा होता है।

पंडित विश्वनाथ के कथन का अभिप्राय यह है कि जिस तरह शरीर-रचना से व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता चलता है उसी तरह रीति से काव्य के रसात्मक स्वरूप का बोध हो जाता है। इसी को आधार बनाकर पंडित रामदहिन मिश्र कहते हैं - "शब्दार्थ विशिष्ट रचना है, उसे रीति कहते हैं।

हिन्दी में आचार्य भिखारीदास ने काव्य-रीति अर्थात् रस गुण, दोष अलंकार आदि सभी तत्वों के अर्थ में रीति-शब्द का प्रयोग किया है।

—

"काव्य की रीति सीखी सुकविन सों
देखी-सुनी बहुलोक की बातें।"

बलराम कुमार

रीति

मुख्य रूप से रीति का सम्बन्ध रचना के सौन्दर्य से है।

रीति और वक्रोक्ति — रीति काव्य के बाह्य रूप से विशेष सम्बन्ध रखती है, जबकि वक्रोक्ति अन्तरंग पक्ष से विशेष सम्बन्ध है। रीति सिद्धान्त में अप्रत्यक्ष रूप से (गुणों के अन्तर्गत) रस की स्वीकृति है जबकि वक्रोक्ति का रस ध्वनि से विशेष सम्बन्ध है।

आधुनिक युग में रीति का प्रयोग शैली (style) के अर्थ में होता है। कवि अपनी रचना में विषय-वस्तु, भाव एवं अर्थों के अनुरूप जिस प्रकार की पद-योजना करता है अथवा जिस ढंग से अपनी बातें कहना चाहता है वह ढंग ही रीति है। इस दृष्टि से रीति कथन की भंगिमा है जो कवि की रुचि और भाषा क्षमता पर निर्भर होती है। इस दृष्टि से प्रत्येक कवि की ही नहीं प्रत्येक रचना की रीति भिन्न होती है।

डा० भागीरथ मिश्र ने रीति को शैली मानते हुए इस पर नए ढंग से विचार करने का सुझाव दिया है। उनके अनुसार "शैली या रीति काव्य-रचना सम्बन्धी वह विशेषता है जो कवि की प्रकृति और व्यक्तित्व, वर्णयोजना, शब्द-सं० अलंकार प्रयोग, भाव सम्पत्ति एवं उक्तिवैचित्र्य परिणामस्वरूप प्रकाशित होती है।"

बलराम कुमार

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डी. एल. के. ओ. डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर